प्रथम अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व और साहित्य का परिचय"

प्रथम अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व और साहित्य का परिचय"

❖ विषय प्रवेश :—

बींसवी सदी के अंतिम दशक में उभरकर आयी महिला रचनाकारों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रणी है। उनके कथासाहित्य में नारी चरित्र का प्रमुख रूप से चित्रण हुआ है। वह एक नारी होने के नाते नारी की पक्षधर है, इसलिए उनके साहित्य में 'नारी—जीवन' ही प्रमुख रहा है। वह एक बहुचर्चित, प्रतिभासंपन्न लेखिका है।

अत: ऐसी प्रतिभासंपन्न लेखिका मैत्रेयीजी का व्यक्तित्व एवं जीवन—परिचय जान लेना आवश्यक प्रतित होता है। उनके जीवन संबंधी जानकारी 'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथा से मिलती है। जिसका विवेचन प्रस्तुत अध्याय में करने का प्रयास मैंने किया है।

१.१ जीवन एवं व्यक्तित्व :—

१.१.१ जन्म :

मैत्रेयी पुष्पाजी का जन्म उत्तरप्रदेश राज्य के अलीगढ जिले के इगलास तहसील के 'सिकुर्रा' गॉव कें ब्राह्मण परिवार में ३० नवंबर १९४४ को उनका जन्म हुआ। अपने जन्मस्थान के प्रति उनके मन में आस्था रही है।

१.१.२ बचपन एवं परिवार :

१.२.१ माता —

मैत्रेयी पुष्पाजी के मॉ का नाम 'कस्तूरी' था। कस्तूरीजी का जन्म ब्राह्मण परिवार के किसान परिवार में हुआ। कस्तूरीजी बचपन से ही शादी से सख्त नफरत करती थी। वह हमेशा कहती है कि, "मैं ब्याह

नहीं करूँगी।"[१] परंतु अंग्रजी हुकूमत के कुर्की नीलामी से बचने के लिए

कस्तूरी की मॉ उसे आठ सौ रूपएँ में बेच देती है। इसी तरह वह अठ्ठाईस वर्ष के हीरालाल से ब्याही जाती है। बाद में हीरालाल कस्तूरीही को गर्भावस्था में छोडकर दिल्ली भाग गए क्योंकि जिस रकम से कस्तूरीजी को ब्याहकर लाए थे वही चुकाने में वह असमर्थ रहे। पति के भाग जाने के बाद वह रोजी–रोटी के लिए तडपती है। ऐसी हालत में वह एक बेटे को जन्म देती है, जो ज्यादा दिन जीवित नहीं रहा।

कस्तूरीजी के ससूर मेवाराम अपाहिज थे। उनकी सेवा वह करती रही। समयोपरांत पति वापस आ गए, परंतु उनके घर के प्रति जिम्मेदारियॉ बढती गयी। कुछ दिनों बाद हीरालालजी 'मोतीझला' की बीमारी से मर गए। उस समय कस्तूरीजी के गोद में अठारह महीने की बच्ची थी। उसी मैत्रेयी को पढ़ा लिखाकर बडी करने के सपने वह देखने लगी। पति के बाद कस्तूरीजी के ससुर ही एकमात्र सहारा रह गये। कस्तूरीजी को शुरू से पढाई में रूची थी। ससूर मेवाराम का सहयोग भी मिलता रहा। पढ़ लिखकर उन्होंने नौकरी प्राप्त की। कस्तूरीजी नौकरी में अपने काम के प्रति सजग रही।

कस्तूरीजी चाहती थी कि मैत्रेयी पढ़लिखकर नौकरी करें, विवाह के बंधन में न बंधे परंतु मैत्रेयीजी नौकरी करने से साफ इन्कार करती है।

१.१.२.२ पिताजी –

मैत्रेयी पुष्पाजी के पिताजी का नाम 'हीरालाल' था। उन्होंने

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – "कस्तूरी कुण्डल बसै", प्र. क्र ९

अट्ठाईस वर्ष की आयु में कस्तूरीजी से विवाह किया था। कस्तूरीजी के मॉ ने ही उन्हें कुर्की नीलामी से बचने के लिए आठ सौ रूपयों में बेच दिया था। जमींदार का कर्जा उतारने में असमर्थ रहें इसलिए वह दिल्ली भाग गए। वह कुछ दिनों बाद लौट आते है। कस्तूरीजी को एक बेटे की मृत्यू के पश्चात दूसरी संतान एक बेटी होती है, जिसका नाम वह 'मैत्रेयी' रखते है। इसी बीच खुर्जावाले पंडितने मैत्रेयी का भविष्य बताया, इसके बारे में कस्तूरी को बताते हुए हीरालाल कहते है,"तू जानती है मैत्रेयी की कथा, मैत्रेयी कौन थी? ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी। उन्होंने अपने ऋषि—पति से कोई सुख नहीं चाहा, बस ज्ञान मॉगा था। "[१] इस तरह हीरालाल अपनीं बेटी की भविष्यवाणी पर खुश थे।

हीरालाल मैत्रेयी से बहुत प्यार करते थे परंतू कुछ दिनों बाद 'मोतीझला' की बीमारी से वह इस दूनिया से चल बसे। अंत में मरणद्वार पर खडे पिताने, "अंत की मुनादी करता हुआ रूँधी हुई आवाज में विलीन हो गया। आवाज में जो ध्वनि बजी थी, वह थी मै...त्रे...यी।"[२]

इस तरह डेढ़ साल की उम्र में ही पिताजी की छत्रछाया और स्नेह से मैत्रेयी जी के हमेशा के लिए वंचित हो गई।

१.१.२.३ दादाजी

मैत्रेयी पुष्पाजी के दादाजी का नाम 'मेवाराम' था। मैत्रेयी के पिताजी हीरालाल की मौत के पश्चात वे ही उनके परिवार का एकमात्र सहारा रहे। अपाहिज होते हुए भी उन्होंने विधवा बहू कस्तूरी और छोटीसी नाती मैत्रेयी इन दोनों की परवरिश की। उन दोनो की

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — "कस्तूरी कुण्डल बसै", — पृ. क्र. ३६—३७

२. मैत्रेयी पुष्पा — "कस्तूरी कुण्डल बसै", — पृ. क्र. २५

चिंता हमेशा दादाजी को लगी रहती। हीरालालजी के मृत्यु के कारण वह पुत्र सुख से वंचित रहे। पुत्रसुख के लिए वह हमेशा तरसते रहे। उनकी बहू कस्तूरीजीने उसकी सेवा में कभी किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी। मेवारामजीने अपनी बहू की पढाई–लिखाई पर कभी पाबंदी नहीं लगाई। बल्कि अपना सहयोग दिया। उन्होंने बहू की हर इच्छा को पूरा किया।

मैत्रेयीजी दादाजी उसे बहुत प्यार करते थे। उसके भविष्य की चिंता उन्हें हमेशा सताती। मेवारामजीने अपने मरणकाल में कहा था–"मेरा क्रियाकर्म, मेरा श्राद्ध कर्म मेरी पोती करेगी, क्योंकि वही हमारी जायदाद की वारिस होगी।"[१] वे ज्यादा दिन जीवित नहीं रहें। वे स्वभाव से बहुत अच्छे थे।

बचपन :–

मैत्रेयीजी का बचपन मॉ कस्तूरी तथा दादाजी मेवाराम की छत्रछाया में बीता। मैत्रेयी डेढ साल की थी, तब उसके पिता की मौत हुई। वह अपने पिता के स्नेह से वंचित रही। लेकिन दादाजी उसे बहुत प्यार मिला। मैत्रेयी की मॉ पढाई हेतु गॉव से ढाई कोस दूर चली जाती, इसी बीच उसको दादाजी ही लाड–प्यार करते थे। किसी चीज की कमी का अनुभव उसे नहीं करते। मॉ और दादाजी के प्यार और स्नेह में उनका बचपन बीत रहा था।

मैत्रेयीजी को स्कूल तथा पढ़ाई में रूचि कम थी। दादाजी के मृत्यू के बाद मॉ कस्तूरी मैत्रेयीजी को पढ़ाई के लिए परिचितो कें घर छोडती और अपनी नौकरी पर चली जाती। ऐसी स्थिती में पारिवारिक आत्मीयजनों का अभाव और पितृप्रेम से वंचित मैत्रेयी को दरदर की ठोकरें खाने की नौबत आयी। मैत्रेयीजी का बचपन असुरक्षित रहा। मॉ

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – "कस्तूरी कुण्डल बसै", – पृ. क्र. ४४

की नौकरी के कारण हर दो साल के बाद स्कूल बदल जाता, सहपाठी बदल जाते और लडकी होने के कारण उन्हें अवहेलित किया जाता। इसी कारण उनकी मॉ ने उसके आश्रित घर भी बदल डाले।

मैत्रेयीजी अपनी मॉ की तुलना हमेशा दूसरी लडकियों की मॉ से करती है। अपने हम – उम्र के साथीयों को मॉ–बाप के संग रहते और उनके स्नेह को देखकर मैत्रयीजी मन ही मन कुढ़ने लगती।

अत: स्पष्ट होता है कि मैत्रेयी एक साधारण प्यार करनेवाली मॉ चाहती थी। उसका सहवास और प्यार चाहती थी परंतु वह हमेशा इन बातों के लिए तडपती रही।

१.१.३ शिक्षा :–

मैत्रेयीजी की शिक्षा का आरंभ उनकें पिता के गॉव 'सिर्कुरा' से हुआ। उनकी विधवा मॉ उसके पढाई पर खास ध्यान देती। कस्तूरीजी नौकरी पेशा औरत होने के कारण हर दो साल बाद स्कूल बदल जाता था। इसलिए कस्तूरी जानपहचानवालों के यहॉ पढाई के लिए मैत्रेयी को छोडकर काम पर चली जाती थी। उन्हें लगता कि मैत्रेयी पढलिखकर नौकरी करें। परंतु मैत्रेयीजी का पढ़ाई में मन नहीं लगता था। पढ़ाई के दौरान हुई भटकाव के कारण उन्हें पढाई में रूचि कम होने लगी। उन्हें स्कूल छोडकर खेरापतिन दादी के आगे–पीछे घूमना, गीत गाना, गॉव में घूमना पसंद था। वह स्कूल में लगातार गैरहाजिर रहती थी, जिसकी शिकायत मास्टरजी मैत्रेयी के मॉ से करते थे और मैत्रेयी को मॉ की मार खानी पडती थी।

पढ़ाई के दौरान हुई भटकाव के चलते हुए वह खिल्ली आ पहुँची। बाद में मोठ तथा झॉसी में उनकी अगली पढ़ाई हुई। तेरहवें साल में मैत्रेयीजीने दसवी कक्षा उत्तीर्ण हो गयी। पढ़ाई के दौरान डी. बी. इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल की कामवासना से बच गई। उन्होंने

बुंदेलखंड कॉलेज, झाँसी से हिंदी साहित्य में बी. ए. तथा एम. ए. किया।

१.१.४ विवाह :—

मैत्रेयीजी लडकी होने के कारण बचपन से हर जगह उपेक्षित रही इसलिए वह विवाह को अपना सुरक्षा कवच मानती है। बी. ए. में पढते वक्त उन्होंने अपने विवाह की इच्छा माँ को बतायी। इसलिए सत्रह साल की उम्र में ही उन्होंने ऐलान किया कि, "माताजी मेरी शादी कर दो।"[१] क्योंकि लडकी होने के कारण मिली प्रताडना को वह हमेशा सहती रही। लेकिन मैत्रेयीजी के माँ की इच्छा थी कि वह पढ़लिखकर नौकरी करें, परंतु मैत्रेयीजी ने नौकरी करने से इन्कार किया। पढ़ाई के दौरान उन्हें जों यातनाएँ मिली इसलिए वह अपनी गृहस्थी बसाना चाहती थी। मैत्रेयीजी की माँ वर के रूप में डॉक्टर, इंजीनियर, अफसरो की खोज करने लगी। आखिर में अलीगढ़ के डॉ. रमेशचंद्र शर्मा के साथ मैत्रेयीजी का विवाह हुआ। यहाँ परदा प्रथा का सख्त रिवाज था। ससूर तथा जेठ के मर्यादाओं, परदा—प्रथा के रिवाजो तथा गृहस्थी के नियमो को उन्होंने निभाया। उनका दांपत्य जीवन सुख— दुख के उतार—चढावों से युक्त रहा। मैत्रेयीजी को तीन लडकियाँ है — नम्रता, मोहिता और सुजाता। आज तीनों लडकियाँ पढलिखकर डॉक्टर बन गयी है। मैत्रेयीजी के बेटियों ने माँ को लेखन के लिए प्रेरित किया। आज मैत्रेयीजी पूरी संजीदगी के साथ लेखन कार्य कर रही है।

१.१.५ व्यक्तित्व की विशेषताएँ :—

मैत्रेयी पुष्पाजी का व्यक्तित्व उनकी 'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथा से प्राप्त होता है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं की

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — "कस्तूरी कुण्डल बसै", — पृ. क्र. ५८

जानकारी हमें इसी आत्मकथा से मिलती है।

१.१.५.१ सादगी :—

मैत्रेयीजी सादगी को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानती है। स्कूल कॉलेज के दिनों से आजतक वह साधारण जीवन पद्धती ही पसंद करती है। उन्हें अमीर सहपाठियों की रंगरेलियॉ और फॅशनबाजी कभी पसंद नहीं आयी। उनके आचार—विचारों से सादगी का रूप झलकता है।

१.१.५.२ मानवता के प्रति प्रतिबद्ध

मैत्रेयीजी मानती है कि, 'मनुष्यता' ही दुनिया का सबसे बडा विचार है, जिसे लोग चाहे जो नाम दे। 'मनुष्यता' के नाते जीवन में उन्होंने 'बराबरी' और 'हिस्सेदारी' के साथ कभी समझोता नहीं किया। उनके व्यक्तित्व पर किसी एक सिद्धांत या विचारधारा का प्रभाव नहीं रहा। उन्होंने 'मानवता' को ही सर्वश्रेष्ठ माना है।

१.१.५.३ मॉ के प्रेम की प्यासी —

मैत्रेयीजी पिताजी के मृत्यु के पश्चात दादाजी और मॉ की छत्रछाया में रही। परंतु मॉ कस्तूरी नौकरी के कारण घर से बाहर रहती, वह अपने बेटी मैत्रेयी से खुलकर बातें और प्यार नही कर सकती, इस कारण मैत्रेयी अपनी मॉ के प्यार से वंचित रहती। वह अपनी मॉ की तुलना दूसरों की मॉ के साथ करती। उनकी मॉ हमेशा पढ़ाई को लेकर ओर जोर जबरदस्ती करती। पढ़ाई के लिए उसे दूसरों के घर छोड जाती। उसे दूसरों के यहॉ हमेशा उपेक्षा मिलती। उस वक्त उसे अपनी मॉ की कमी महसूस होती। इस तरह मैत्रेयी मॉ होते हुए भी उसके लाड—प्यार के लिए तरसती रही।

१.१.५.४ शौक :—

मैत्रेयीजी को लोकगीत सुनना, लोककथाएँ पढना—सुनना आदि उनके शौक रहे है। उनके मन में गीतिकथाओं के प्रति लगाव रहा है। बचपनसे ही खेरापतिन दादी के साथ गीतिकथाएँ गाने की आदत लग गयी थी।

१.१.५.५ साहसी :—

दस साल की अवस्था में ही मैत्रेयीजी के साहसी वृत्ती के दर्शन होते है। बूढ़ी भाभी कहती थी कि "दस साल की उम्र में वह पैसेंजर ट्रेन में बैठकर अकेली झॉसी गई थी, क्या अब नहीं जा सकती? अलीगढ से आगरा और आगरा से झॉसी। खुद ही टिकिट लिया, खुद ही गाड़ी बदली। सफर भी रात का था।"[१] यहॉ मैत्रेयी के साहसी दर्शन होते है।

कॉलेज के दिनों में जब मोंठ के इंटरमीडियट स्कूल के प्रिंसीपलने मैत्रेयी के साथ कामापचारी व्यवहार किया तब सहपाठियों का साथ लेकर उन्होंने प्रिंसीपल के खिलाफ आंदोलन छेड दिया। यहॉ भी उनके साहसी रूप के दर्शन होते है।

१.१.५.६ स्नेह की भूखी :—

मैत्रेयी के पिताजी हिरालाल की मृत्यु 'मोतीझला' की बीमारी से हुई इससे वह डेढ़साल की उम्र में ही पिता के स्नेह से वंचित रही। इसके बाद वह मॉ और दादाजी के छत्रछाया में रही। लेकिन मॉ नौकरी के कारण दिनभर घर से बाहर रहती। इसलिए मॉ के प्यार और सहवास के लिए वह हमेशा तरसती रही और अपनी मॉ की तुलना हमेशा दूसरी लडकियों की मॉ से करती हुई अपनी मॉ से

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — "कस्तूरी कुण्डल बसै" — पृ. क्र. ५५

कहती है– "माता जी। मेरी माताजी क्यों है? अम्मा या मॉ क्यों नही है? वे घर में खाना बनाती है, दही बिलोती है। आंगन लीपती हैं, बहू बनकर रहती है। मॉ वे ही होती हैं जिनसे उनकें बच्चे लडते है। चिल्लाचिल्लाकर रोटी मॉगते है। वे खेलने को कहती हैं, पढ़ने को भी कहती हैं, पर माताजी की तरह नहीं।"[१] अत: स्पष्ट है की मैत्रेयी एक साधारण प्यार करनेवाली मॉ चाहती थी, उसका संग, सहवास और प्यार चाहती थी। परंतु वह हमेशा स्नेह को तरसती रही।

१.१.५.७ विवाह की अभिलाषी :–

मैत्रेयीजी बचपन से ही शिक्षा और नौकरी की अपेक्षा विवाह के लिए इच्छूक रहीं क्योंकि विवाह को अपने नारीत्व की सुरक्षा कवच मान लिया था। लडकी होने के कारण अनेक जगह उन्हें प्रताड़ना सह लेनी पडी। जब वह मोंठ के इंटरमीडियट स्कूल में पढ़ रही थी तब प्रिंसिपल की कामवासना से आहत हुई। इस प्रकार पढ़ाई के दौरान हुई यातानाओं के कारण वह अपनी गृहस्थी बसाना चाहती थी। इसलिए जब वह बी. ए. में पढ़ रही थी तभी मॉ से कहा, "माताजी, मेरी शादी कर दो"[२]

इस प्रकार यहॉ प्रतित होता है कि, वह विवाह की अभिलाषी रही।

१.१.५.८ दबंग औरत :–

मैत्रेयी बिना किसी औपचारिकता से लोगों से मिलना, खुले मन से बातें करना बेहद पसंद करती हैं, क्योकि इसे वे अपने लिए 'बीमारी में दवा' के समान मानती है। मिलकर रहना, खूलकर हॅसना – हॅसाना और कोई यादगार काम करना ही अपनी जीवन की

---

१. संपा.राजेंद्र यादव–हंस (मासिक) जनवरी फरवरी २०००,पृ.क्र.२०१
२. मैत्रेयी पुष्पा – "कस्तूरी कुण्डल बसै", – पृ. क्र. ५८

इच्छा मानती है। वह एक दबंग औरत के रूप में हमारे सामने आती है।

१.१.५.९. अभावयुक्त और अकेलेपन के पीड़ा से युक्त :—

मैत्रेयीजी को अपना बचपन अकेलेही गुजारना पड़ा। डेढ़ साल की उम्र में अपने पिता हीरालाल की प्यार से वंचित रही। मॉ पढ़ाई हेतु गॉव से दूर जाती थी। बाद में दादाजी का भी देहांत हुआ। दादाजी के देहांत के बाद मॉ ने घर में जो गाय पाली थी वह भी बेच डाली। तब मैत्रेयी बहुत रोयी और कह रह थी, "प्यारे बाबा, तुम मेरा साथ इतनी जल्दी छोड गए। क्या जानते नहीं थे कि लाली अकेली रह जाएंगी। यह सूना घर और मैं....यह भी नही पूछ पा रही कि मॉ गाय क्यों बेच रही हो, एक साथिन तो रहने दो।"[१] इस प्रकार मैत्रेयी बेआवाज परलोकवासी बाबा को पुकारकर कहती है। इस प्रकार उन्हें अभावयुक्त, पीडा से भरा जीवन बीताना पड़ा।

१.१.५.१० अक्खड़पन :—

मैत्रेयी के व्यक्तित्व में अक्खड़पन भी दिखायी देता है। ब्राह्मण माता–पिता की संतान होते हुए भी मैत्रेयी झॉसी जिले के खिल्ली गॉव के प्रधान अहीर चिमनसिंह के यहॉ पली और बढी। अत: उनके व्यक्तित्व में जाटनियों और अहीरनियों की बोधक आत्माओं का वास हो गया। उसके साथ उनका अक्खड़पन भी उनमें आ गया था।

१.१५.११ नारी की प्रबल पक्षधर :—

नारी होने के नाते नारी पर हुए अन्याय, अत्याचार, भोगे हुए संघर्ष व नारी जीवन की अन्य समस्याएँ इन्हें चित्रित करने के लिए

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — "कस्तूरी कुण्डल बसै", — पृ. क्र. ४४

उन्होंने अपने कथा–साहित्य में नारी को केंद्रबिंदु में रखकर विवेचन किया है। उनके उपन्यास साहित्य में 'चाक' की सारंग और 'अगनपाखी' की भुवन के जीवन संघर्ष को देखने के
बाद यह पता लगता है की, मैत्रेयी नारी की प्रबल पक्षधर है।

१.१.५.१२ विद्रोही :–

मैत्रेयीजी को सीधा–साधा जीवन पसंद था। जब वह इंटरमीडियट स्कूल में पढ़ रही थी तब प्रिंसीपल की कामवासना का शिकार होने से बच गयी थी। उसने प्रिंसीपल की कामापचारी हरकत पर अपने सहपाठियों के साथ आंदोलन छेड़ दिया था। इससे पूरे इलाके में तहलका मचा था। स्कूल की मैनेजिंग कमेटी भी मुसीबत में आ गयी। यहाँ उनका विद्रोही रूप हमारे सामने आता है।

१.१.५.१३ स्त्री–पुरूष की समतावादी :–

मैत्रेयी खुद एक नारी है। नारीपर हो रहे अत्याचारों का वह कडा विरोध करती है। फिर भी वह स्त्री और पुरूष दोनों को समतावादी दृष्टि से देखती है। स्त्री हो या पुरूष गॉव हो या शहर, दलित हो या सवर्ण, शोषक हो या शोषित मैत्रेयी दानों को स्वातंज्य, समता, बंधुता, न्याय जैसे मानवीय मूल्यों की कसौटी पर परखती है। वह नारीयों की पक्षधर है पर स्त्री–पुरूष को समान मानती है।

१.१.५.१४ अभिनय कुशल :–

मैत्रेयीजी के व्यक्तित्व का 'अभिनयता' यह एक विशेष पहलू रहा है। गॉव में जन्माष्टमी के दिन कृष्ण जन्म के बाद 'जहॉआरा' नाटक खेला जाता था। इस नाटक में सहभागी होने से मॉ ने मना कर दिया था। फिर भी मैत्रेयीजी 'जहॉआरा' की भूमिका में स्टेज पर उतरी और अपने अभिनय से दर्शकों को मुग्ध कर दिया।

१.१.१.१५ स्वाभिमानी :—

मैत्रेयी की मॉ कस्तूरी नौकरी करती थी। तब वह मैत्रेयी दूसरे पडोसी तथा जानपहचानवालों के घर छोड देती तो वह लोग मैत्रेयी पर दया, रहम करते, उसपर तरस खाते। यह बातें मैत्रेयी को अच्छी नहीं लगती। अपमान पीकर रहना भी उनके स्वभाव में कभी न रहा।
मैत्रेयी के पति रहमभरा कथन करते कि,"कोई कुछ भी कहता रहे, तुम दिल पर मत लो। मैंने तुम्हे पसंद किया है, शादी की है, प्यार किया है। कितनी ही खूसबूरत लडकियॉ खारिज की थी।"[१] अपने प्रति पति की इस रहमपर के कथन पर वह तुरंत नाराज हो जाती। यहॉ उनके स्वाभिमानी वृत्ति का परिचय होता है।

❖निष्कर्ष :—

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि मैत्रेयी का व्यक्तित्व विविधता से युक्त है। अष्टपैलू व्यक्तित्व का चित्रण हमें देखने को मिलता है। उनका जीवन सुख—दुख की चढाव—उतारों से युक्त रहा है। ऐसा लगता है, अनवरत संघर्ष का ही नाम है — मैत्रेयी।
मैत्रेयीजी का व्यक्तित्व विविध भावभावनाओं से युक्त है। सादगी, साहसी, स्वाभिमानी, संघर्षशील, अन्याय के प्रति विद्रोह करनेवाली, स्नेह की भूखी, मानवता के प्रति प्रतिबद्ध, अकेलेपन की पीडा से युक्त आदि विविध व्यक्तित्व को पहलूओं से भरा उनका जीवन हमारे सामने आता है। इस प्रकार उनका व्यक्तित्व जटिलता से पूर्ण रहा है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — "कस्तूरी कुण्डल बसै", — पृ. क्र. २५५

१.१.१.२. साहित्यिक परिचय :—

हिंदी के कथासाहित्य में मैत्रेयी पुष्पाजी का आगमन १९९० में हुआ। उनका १९९० में प्रकाशित 'स्मृती—दंश' इस उपन्यास से साहित्यजगत में आगमन हुआ। उन्होंने कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, वैचारिक साहित्य आदि विधाओं में रचनात्मक योगदान दिया है। उनका मौलिक योगदान कथा साहित्य में रहा है। उपन्यास और कहानी विधा के द्वारा ही वे प्रतिभाशाली लेखिका के रूप में जानी जाती है। उनकी प्रकाशित रचनाएँ निम्नप्रकार है—

१.१.१.२.१ उपन्यास साहित्य :—

अ.क्र.	उपन्यास	प्रकाशन साल
१	स्मृति—दंश	१९९०
२	बेतवा बहती रही	१९९३
३	इदन्नमम्	१९९४
४	चाक	१९९७
५	झूलानट	१९९९
६	अल्मा कबूतरी	२०००
७	अगनपाखी	२००१
८	विजन	२००२
९	कही इसुरी फाग	२००५
१०	खुली खिडकियाँ	२००८

१.१.१.२.२ कहानी साहित्य :—

अ.क्र.	कहानी संग्रह	प्रकाशन साल
१	चिन्हार	१९९१
२	ललमनियाँ	१९९६
३	गोमा हँसती है	१९९८

१.१.१.२.३ आत्मकथा :—

१. "कस्तूरी कुण्डल बसै" — २००२

२. गुड्डियॉ भीतर गुड्डियॉ" — २००८

१.१.१.२.४ पुरस्कार :—

१. हिंदी अकादमीद्वारा साहित्य कृती सम्मान

२. कथा पुरस्कार (फैसला कहानी पर)

३. 'बेतवा बहती रही' पर प्रेमचंद सम्मान (उत्तरप्रदेश साहित्य संस्थान १९९५)

४. इदन्नमम् उपन्यास के लिए

४.१ नंजना गुडु तिरूमालम्बा पुरस्कार (बैंगलूर)।

४.२ प्रेमचंद सम्मान, उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान।

४.३ वीरसिंह जूदेव पुरस्कार, मध्यप्रदेश साहित्य।

४.४ कथाक्रम सम्मान।

४.५ साहित्यकार सम्मान, हिंदी अकादमी, दिल्ली।

४.६ सार्क लिटरेरी अवार्ड।

उपन्यास साहित्य का संक्षिप्त परिचय :—

१. 'स्मृती—दंश' (१९९०)

विवेच्य उपन्यास में मैत्रेयी ने नारी के जीवन का चित्रण किया है। सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर नारी के संघर्ष का अंकन किया है। नारी ने अपने जीवन को किस प्रकार दॉव पर लगाया है? इसका यथार्थ चित्रण इसमें किया है। नारी के जीवन को झूठी प्रतिष्ठा और स्वार्थ के हेतू से दॉव पर लगाया है। स्मृती—दंश यह मैत्रेयीजी का सफल उपन्यास है।

२. 'बेतवा बहती रही' — (१९९३)

नारी के मन की गहराई समझनेवाला यह मैत्रेयी का उपन्यास है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है — उर्वशी। वह नियति और व्यवस्था का शिकार बनी है। समस्त भारतीय नारीयों का प्रतिनिधित्व वह करती है। भारतीय गॉवो में बढ़ रही भ्रष्ट राजनीति व्यवस्था, बुंदेलखंडी जनजीवन और नारी—चेतना के विभिन्न पहलुओं का चित्रण हुआ है। नारी जीवन को जिस त्रासदी और संघर्ष का सामना करना पडता है उसके विरोध में उठ खडे होने की प्रेरणा यह उपन्यास पाठको को देता है।

३. 'इदन्नमम' — (१९९४)

विवेच्य उपन्यास बुंदेलखंडी जनजीवन का महाकाव्य है। इस उपन्यास की नायिक मंदाकिनी है। इसका व्यक्तित्व संघर्षशीलता, विवेकशीलता, संकल्पशीलता और सृजनशीलता से युक्त है। तीन पीढ़ियों मान्यताएँ कैसे बदलती है? इसका चित्रण किया है। सृजनशील नारी की चेतना भारतीय गॉवो में उभरती है, इसका चित्रण किया है। तथा गॉव में नारी के प्रति हो रहा जनजागरण और नारी के मन की गहरी पहचान आदि इस उपन्यास की विशेषताएँ है।

४. 'चाक' — (१९९२)

मैत्रेयीजी का 'चाक' यह उपन्यास प्रकाशन क्रम से चौथा उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक ब्रज प्रदेश के ग्रामीण परिवेश से लिया है। इस उपन्यास में ब्रज प्रदेश के गॉवो की सामाजिक, राजनितिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितीयों का यथार्थ चित्रण हुआ है।

विवेच्य उपन्यास की नायिका सारंग है। वह उदात्त मनोभवों से युक्त संवेदनशील, व्यवहारकुशल, विवेकशील साहसी है। अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक रहकर संघर्ष करनेवाली ऐसी दृढसंकल्पी पात्र है। वह भ्रष्ट समाजव्यवस्था से संघर्ष करती है। नारी की समानता, स्वातंञ्यता, सुरक्षा और अस्तित्व जैसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष और विद्रोह का स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

५. 'झूला नट' — (१९९९)

मैत्रेयीजी का यह उपन्यास प्रकाशन क्रम से पॉचवा उपन्यास है। यह एक लघु उपन्यास है। विवेच्य उपन्यास सृजनशील, नयी नारी की चेतना का दस्तावेज है। विवेच्य उपन्यास की नायिक शीलो और नायक बालकिशन है। वह बचपन से मॉ के आदेशों का ताबेदार है। इसमें मॉ और शीलों के संघर्ष का चित्रण हुआ है। इनके संघर्ष का चित्रण हुआ है। इनके संघर्ष के माध्यम से परंपरागत रूढ़िवादी नारी—चेतना और नयी नारी चेतना के संघर्ष का सुक्ष्मता से चित्रण किया है। इसमें चित्रित नयी नारी की चेतना रूढ़ियों, परंपराओं और अंधविश्वासों का विरोध करके अपने अस्तित्व, अधिकार, स्वातंञ्यता, समता और अस्मिता को हासिल करने के लिए प्रयत्न करती है। शीलो नयी नारी—चेतना का प्रतिनिधी पात्र है। और मॉ रूढ़िवादी पात्र है। इस उपन्यास का नायक बालकिशन खेती करनेवाला युवावर्ग का

प्रतिनिधी है। सुमेर यह नौकरी करनेवाला युवावर्ग का प्रतिनिधी पात्र है। विवेच्य उपन्यास में शीलो के पति बालकिशन की द्विधामनस्थिती का चित्रण दिखाया है।

६. अल्मा कबूतरी — (२०००)

मैत्रेयीजीका यह छठा उपन्यास है। इस उपन्यास की कथावस्तु जरायमपेशा कबूतरा जनजाति की है। इसमें बुंदेलखंडी जनजीवन का चित्रण किया है। यह उपन्यास मौलिकता ओर नवीनता से संपन्न है। इसमें मानवता का दर्शन हुआ है। इसमें जो वर्णजाति वर्ग—संप्रदाय या लिंग से परे मनुष्यत्व के धरातल पर एकता और संघर्ष के बलपर मात देने के लिए प्रेरित है। एकता और बंधुता इसमें दिखती है। इस उपन्यास में भूरी, अल्मा और कदमबाई कें रूप में नारी की गरिमा का चित्रण किया है। इसमें मंसाराम, धीरज और केहरसिंह के माध्यम से इन्सानी जज्बे को दिखाया है। इसमें भ्रष्ट शासनव्यवस्था की अमानुषता का चित्रण किया है। इसमें मंसाराम का चरित्रांकन निष्पक्षता और तटस्थता के साथ किया है।

विवेच्य उपन्यास का कथ्य एवं शिल्प मौलिकता से युक्त है।

७. 'अगनपाखी' — (२००१)

मैत्रेयीजी का यह प्रकाशन क्रम से सातवॉ उपन्यास है। यह उपन्यास 'स्मृती—दंश' का पुनर्नवीकरण है। फिर भी इसकी एक स्वतंत्र महत्ता है। इसमें भी नारी—जीवन तथा ग्रामीण नारी की संघर्ष का चित्रण किया है।

विवेच्य उपन्यास की प्रमुख पात्र भुवन है, जो अपने जीवन के दुख—तापों की आग में जलकर नए सिरे से अपनी जिंदगी की शुरूवात करती है। इसमें दिखाया है कि रिश्ते नाते स्वार्थरूप में एक

लडकी की जिंदगी बरबाद करते है। समाज की कर्मकांडप्रियता, और मानवधर्म की श्रेष्ठता को पुजारीजी के माध्यम से चित्रित किया है।

८. विज़न –

विवेच्य उपन्यास प्रकाशनक्रम से आठवां उपन्यास है। इसका प्रकाशन २००२ में हुआ। इस उपन्यास में वैद्याकिय क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्ट व्यवस्था का चित्रण किया है। इसमें अभिजात्य वर्ग में व्याप्त विसंगतियों को चित्रित किया है। इसमें भी नारी पर हो रहे अत्याचारों और शोषण का चित्रण किया है। एक उच्चशिक्षित नारी के अस्तित्व एवं अस्मिता, उसकी प्रतिभा के दमन, शोषण का अंकन किया है। नारी उच्चशिक्षित होकर भी उसके ससूरालवाले उसपर अत्याचार करते है। उसके दमन, हनन और विवशता की अंतर्व्यथा का चित्रण किया है।

इस उपन्यासद्वारा चिकित्सा–जगत के षडयंत्र, उच्च शिक्षा संस्थाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि का चित्रण किया है। इसप्रकार 'विजन' मैत्रेयीजी का मौलिक उपन्यास है। यह अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। 'नारी–जीवन' को केंद्र में इस उपन्यास की रचना हुई है।

❖कहानीसंग्रह का संक्षिप्त परिचय

मैत्रेयी पुष्पाजी ने हिंदी कथासाहित्य में अपना विशिष्ट स्थान निर्माण किया है। उन्होंने अपने कथासाहित्य में अधिकतर ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। नारी–जीवन को केंद्र में रखकर कथासाहित्य का निर्माण किया है। समाजद्वारा हो रहा नारी का शोषण और उसके चरित्रो का निर्माण गॉव के परिप्रेक्ष्य में किया है।

और प्रेमचंद परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। मैत्रेयीजी के प्रमुख कहानीसंग्रहों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित किया है।

१. 'चिन्हार' कहानीसंग्रह :—

मैत्रेयी पुष्पाजी का 'चिन्हार' यह प्रथम कहानीसंग्रह है, जो १९९१ में प्रकाशित हुआ। इस कहानीसंग्रह में ग्यारह कहानियॉ है। उनके नाम इसप्रकार है— "अपना—अपना आकाश, सहचर, बहेलिये, मान नॉहि दस—बीस, हवॉ बदल चुकी है, आक्षेप, कृतज्ञ, भॅवर, सफर के बीच, केतकी, चिन्हार।" इन सभी कहानियों के केंद्र में 'नारी' एवं नारी—जीवन है। नारी—जीवन के विविध पहलुओं और समस्याओं का चित्रण इसमें किया है। कुछ कहानियों में राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार भी चित्रित किया है। विवेच्य कहानियों में बदलते मानवीय जीवनमूल्यों, झूठी मान्यताओं का चित्रण किया है। नारी—चेतना, अस्मिता, अस्तित्व की सुरक्षा और संघर्षशील नारी, गॉवो में बढ़ती अराजकता और सामाजिक विसंगतियों को अंकन विवेच्य कहानियों में किया है। 'केतकी' और 'बहेलिये' कहानियों में नारी पर हुए बलात्कार, 'भॅवर' कहानी में परित्यक्त नारी, 'कृतज्ञ' कहानीद्वारा नारी की कहानी में अत्याचारों से पीड़ीत नारी का चित्रण किया है।

२. 'ललमनियॉ' कहानीसंग्रह —

मैत्रेयीजी का यह द्वितीय कहानीसंग्रह है। इसका प्रकाशन १९९६ में हुआ है। इस कहानीसंग्रह में ग्यारह कहानियॉ है। वे निम्नप्रकार से है। 'सिस्टर, सेंध, बेटी, अब फूल नहीं खिलते, रिजक, बोझ, पगला गयी है, भागवती, छॉह, तुम किसकी हो बिन्नी, ललमनियॉ' आदि। प्रस्तुत कहानीसंग्रह में भी नारी के जीवन को प्रमुख रूप से किया है। इसमें नारी—जीवन के विविध पहलुओं का

तथा उनकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसमें शोषितों के प्रति गहरी सहानुभुती है। हमारे यहॉ नारी को दुय्यम स्थान है। जिससे अनेक समस्याओं का निर्माण हुआ है। 'बिछुडे हुए' कहानी की चंदा आदर्श पत्नी के रूप में पाठको के मन में उतरती है। 'बेटी' और 'तुम किसकी हो बिन्नी' कहानी में बेटी का आदर्श रूप चित्रित किया है। 'मुन्नी' पराया धन समझकर उपेक्षित जीवन जीनेवाली आखिर में माता–पिता का सहारा बनती है। अत: विवेच्य कहानियों में चित्रित नारी करूणाभाव के साथ पाठकों के मन में गहराई के साथ उतरती है।

३. गोमा हॅसती है –

विवेच्य उपन्यास १९९८ में प्रकाशित हुआ। यह प्रकाशन क्रम से तीसरा कहानीसंग्रह है। इसमें शतरंज के खिलाडी, राय–प्रविण, बिछुडे हुए....प्रेम भाई एण्ड पार्टी, ताला–खुला है पापा, सॉप–सीढी, उज्रदारी, रास, बारहवीं रात, गोमा हॅसती है आदि दस कहानियॉ संकलित है। प्रस्तुत कहानीसंग्रह में व्यक्ति के वैयक्तिक, सामाजिक, राजनितिक जीवन के विविध पहलुओं के रूप दिखते है। दहेज जैसी सामाजिक समस्या का चित्रण इसमें किया है। बलात्कार से वैवाहिक जीवन में आए बिखराव का चित्रण हुआ है।

'उज्रदारी' कहानी में शांति के द्वारा अकेली विधवा नारी अपने जीवन के समस्याओं से संघर्ष करते हुए अधिकारों के प्रति लडती है इसका चित्रण किया है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विवेच्य कहानियों में नारी–पात्रों के जीवन के प्रति संघर्षता, विद्रोहीता, सजगता को चित्रित किया है। 'गोमा हॅसती है' यह एक सफल कहानीसंग्रह है।

❖निष्कर्ष :—

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि मैत्रेयीजी का बींसवी सदी के अंतिम दशक में उभरकर आयी लेखिकाओं में मैत्रेयीजी के साहित्य का निर्माण मौलिक है। मैत्रेयीजी के जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव, प्रसंग और चरित्र उनके कथासाहित्य में दिखायी देते है। उनके जीवन की अनुभूतियॉ उनके साहित्यीक कृतियों में चित्रित हुई है। उनके कथासाहित्य में उनका सुगठित, बहुआयामी जीवन का परिवेश साफ दिखायी देता है। मैत्रेयी पुष्पाजी का जन्म एक किसान परिवार में हुआ। वह ब्राह्मण कुल से है। मैत्रेयी अपने पिता के स्नेह से डेढ़ साल के आयु में ही वंचित हुई। बाद में अपने दादाजी और मॉ कस्तूरी के साथ अधिकतर रही इसलिए उनके विचारों से प्रभवित हो गयी। पिता के मृत्यु के बाद मॉ विधवा बन गयी और दादाजी अपाहिज होने के कारण सारी जिम्मेदारीयों उनकी ऊपर आ गयी। मॉ कस्तूरी नौकरी के लिए घर से बाहर रहती। इसलिए मैत्रेयी को परिचितो या पडोसीयों के घर पर छोड़ जाती थी। मैत्रेयी को पढ़ाई में पहले से कम रूचि थी। उसमें उनका शैक्षिक जीवन संघर्षपूर्ण रहा। कॉलेज के दिनों मे उन्हें प्रिंसीपल के अत्याचार और कामवासना से भी आहत होना पडा था। मॉ की नौकरी के कारण हर दो साल बाद स्कूल बदलना पडता साथ में पढाई के प्रति उनका मन नही लगता। इसलिए उन्होंने खुद नौकरी न करने का फैसला किया।

मैत्रेयीजी 'विवाह' को नारी का सुरक्षा कवच मानती है इसलिए उन्होंने पढ़ाई से ज्यादा विवाह को महत्व दिया और कॉलेज के दिनों मे ही अपने शादी का प्रस्ताव मॉ के सामने रखा। मैत्रेयी पुष्पाजी के कथासाहित्य के परिवेश में उनके जीवन का परिवेश झलकता है। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का दर्शन उनके कथासाहित्य में

होता है। उनका जीवन सुख–दुख की यातनाओं से भरा रहा फिर भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी। हिंदी साहित्य की उच्च कोटि में आज उनका कथासाहित्य पहुँच गया है। उनके व्यक्तित्व का यथार्थ चित्रण उनके साहित्य में सहज और स्वाभाविक रूप में बना है।

'नारी–जीवन' मैत्रेयीजी के साहित्य का प्रमुख केंद्र बना है। एक नारी होने के नाते दुसरी नारी की व्यथा, दर्द दुसरी नारी ही समझ सकती है। तथा नारी–जीवन उनके साहित्य में प्रमुख रूप से झलकता है। मैत्रेयीपर ग्रामीण जनजीवन का गहरा प्रभाव रहा है। अत: बुंदेलखंडी और ब्रजप्रदेश के यथार्थ जनजीवन का चित्रण किया है। नारी–चेतना विशेष रूप से उनके साहित्य के केंद्र में रही है। यही कारण है कि अपनी साहित्य की मौलिकता और सफलता के कारण ही वह प्रतिभासंपन्न कथाकार के रूप में हमारे सामने आती है। और अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुई है।

अत: स्पष्ट है कि मैत्रेयीजी का कथासाहित्य उनके जीवन की अनुभूतियों एवं व्यक्तित्व का परिपाक है। मैत्रेयीजी के कथासाहित्य में नारी–जीवन और ग्रामजीवन ही केंद्र में रहा है। नारी–जीवन के विविध पहलुओं के रूप उनके साहित्य में दिखायी देता है। उनके विचारों की गहराई उनके साहित्य में झलकती है। मानवता के दर्शन भी साथ में होते है। परिवर्तनवादी पात्रों के प्रति मैत्रेयीजी सहानुभूति दिखाती है। उनके लेखन और चिंतन की दिशा कही भी मानवता के लक्ष्य से विचलित नहीं है। मैत्रेयीजी ने नारी की संवेदना सूक्ष्म और मार्मिक शब्दों में चित्रित की है। वह नारी की प्रबल पक्षधर होने के नाते नारी जीवन को अपने साहित्य में चित्रित किया। अत: हम कह सकते है कि मैत्रेयीजी का व्यक्तित्व संपन्न और समृद्ध रहा है, जिसका रूप उनके साहित्यिक कृतियों में

दिखायी देती है। विवेच्य कथा साहित्य उनके प्रत्यक्ष जीवन का परिपाक है। जीवन के अनुभव, प्रसंग उनके कथा साहित्य में चित्रित हुए है। मैत्रेयी अपने साहित्यिक मौलिकता और गुणात्मकता के कारण ही एक सिद्ध और सफल कथाकार के रूप में हमारे सामने आती है। अत: मैत्रेयीजी का व्यक्तित्व उनके कृतित्व को गहराई से समझने में सहायक सिद्ध हुआ है।